International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 05-12-2025, Accepted: 04-01-2026, Published: 19-01-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 37-40

सल्तनत कालीन भारत में हकीमों और वैद्यों की सामाजिक और राजनीतिक स्थिति: एक विस्तृत ऐतिहासिक विश्लेषण

जूही आर्या[1], डॉ. सुनील कुमार चौधरी
[1] शोध छात्रा, जूनियर रिसर्च फेलो, इतिहास विभाग, हिंदू पी. जी. कॉलेज, जमानिया, गाज़ीपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] असिस्टेंट प्रोफेसर (इतिहास), हिंदू पी जी कॉलेज जमानिया, गाजीपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
यह शोध पत्र दिल्ली सल्तनत (1206–1526 ई.) के काल में चिकित्सा व्यवसाय से संबंधित हकीमों (यूनानी चिकित्सक) और वैद्यों (आयुर्वेदिक चिकित्सक) की सामाजिक प्रतिष्ठा, राजनीतिक प्रभाव और आर्थिक स्थिति का एक समग्र और गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि मध्यकालीन भारत में राजनीतिक अशांति के दौरान चिकित्सा वर्ग ने सामाजिक स्थिरता और सांस्कृतिक समन्वय में किस प्रकार एक पुल का कार्य किया। शोध यह स्पष्ट करता है कि सल्तनत काल में चिकित्सक केवल स्वास्थ्य सेवा प्रदाता नहीं थे, बल्कि वे राज्य के उमरा (अभिजात वर्ग) का अभिन्न हिस्सा थे। वे सुल्तानों के राजनीतिक सलाहकार, कूटनीतिक दूत और प्रशासनिक अधिकारी के रूप में सक्रिय थे। यह पत्र विशेष रूप से खिलजी और तुगलक वंश के दौरान चिकित्सा संस्थानों (दारुल–शिफा) के उदय तथा लोदी काल में आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा के बौद्धिक संश्लेषण (जैसे मादन–उल–शिफा की रचना) का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है। अतिरिक्त रूप से, यह शोध इक्ता प्रणाली के अंतर्गत चिकित्सकों को प्रदान किए गए आर्थिक संरक्षण और हिंदू–मुस्लिम चिकित्सकों के बीच सौहार्दपूर्ण संबंधों का परीक्षण करता है। अतः, यह अध्ययन प्रमाणित करता है कि सल्तनत कालीन भारत में चिकित्सा का क्षेत्र धार्मिक सहिष्णुता और वैज्ञानिक उन्नति का एक उत्कृष्ट उदाहरण था, जिसने भारत की मिश्रित संस्कृति की नींव को सुदृढ़ किया।

मुख्य शब्द: तिब्ब–ए–यूनानी, गैलेन, हिप्पोक्रेट्स, अहल–ए–सैफ, अहल–ए–कलम, मलिक–उल–हुकमा, जर्राह, हज्जाम, तबीब, मदद–ए–माश, खिलत, दारुल–शिफा, दीवान–ए–खैरात, तिब्ब

भूमिका–

दिल्ली सल्तनत का इतिहास केवल युद्धों, विजयों और राजवंशों के उत्थान–पतन की कथा नहीं है, बल्कि यह विचारों, विज्ञानों और संस्कृतियों के समागम का भी एक महत्वपूर्ण अध्याय है। 13वीं शताब्दी के आरंभ में उत्तर भारत में तुर्क–अफगान सत्ता की स्थापना ने भारतीय उपमहाद्वीप के सामाजिक और राजनीतिक ढांचे में दूरगामी परिवर्तन किए। इन परिवर्तनों के केंद्र में एक ऐसा वर्ग था जो तलवार की धार से नहीं, बल्कि नब्ज़ और औषधियों के माध्यम से समाज और सत्ता दोनों पर अपनी पकड़ बनाए हुए थाकृयह वर्ग हकीमों और वैद्यों का था।

इस्लाम के आगमन के साथ भारत में तिब्ब–ए–यूनानी (ग्रीको–अरब चिकित्सा) का प्रवेश हुआ। यह चिकित्सा पद्धति गैलेन और हिप्पोक्रेट्स के सिद्धांतों को समाहित करती है, जिन्हें अरब और फारसी विद्वानों जैसे इब्न सिना और अल–राज़ी ने परिष्कृत किया। भारत में आयुर्वेद की एक प्राचीन और सुदृढ़ परंपरा पहले से ही विद्यमान थी, जिसका नेतृत्व ब्राह्मण और उच्च वर्गीय वैद्य कर रहे थे। सल्तनत काल ने इन दो प्रमुख चिकित्सा पद्धतियों के समागम का साक्षात्कार किया।

इस अवधि में चिकित्सा और राजनीति का संबंध अत्यंत प्रगाढ़ था। सुल्तान की व्यक्तिगत सुरक्षा, सेना का स्वास्थ्य और प्रजा का कल्याण — इन तीनों आयामों ने चिकित्सकों को सत्ता के केंद्र में ला खड़ा किया। मंगोल आक्रमणों के परिणामस्वरूप मध्य एशिया के प्रमुख सांस्कृतिक केंद्रों (जैसे बुखारा, समरकंद और बगदाद) के विनाश से विद्वानों, वैज्ञानिकों और चिकित्सकों ने दिल्ली की ओर प्रवास किया, जिससे दिल्ली सल्तनत न केवल राजनीतिक शक्ति का, बल्कि चिकित्सा विज्ञान का भी एक प्रमुख केंद्र बन गई। इस शोध पत्र में हम यह अन्वेषण करेंगे कि कैसे हकीमों और वैद्यों ने अपनी विद्वता के माध्यम से सामाजिक श्रेणी में उच्च स्थान प्राप्त किया और किस प्रकार उन्होंने सल्तनत की राजनीति और प्रशासन को प्रभावित किया।

ऐतिहासिक संदर्भ: चिकित्सा परंपराओं का संक्रमण और स्थापना

सल्तनत काल में हकीमों और वैद्यों की स्थिति को समझने के लिए उस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक है जिसमें ये परंपराएं विकसित हुईं और एक–दूसरे के संपर्क में आईं।

1. पूर्व–सल्तनत कालीन वैज्ञानिक परिदृश्य

सल्तनत की स्थापना से पूर्व, भारत का आयुर्वेद ज्ञान अरब जगत में स्थापित हो चुका था। अब्बासी खलीफा हारून अल–रशीद और बरमकी वजीरों के संरक्षण में भारतीय वैद्यों (जैसे मनक और इब्न धन) को बगदाद आमंत्रित किया गया, जहां उन्होंने संस्कृत चिकित्सा ग्रंथों का अरबी में अनुवाद किया। चरक संहिता और सुश्रुत संहिता के अरबी अनुवादों ने यूनानी चिकित्सा को समृद्ध किया। अतः, जब तुर्क शासक भारत आए, तो उनके साथ आए हकीम भारतीय चिकित्सा ज्ञान से पूरी तरह अपरिचित नहीं थे। यह ऐतिहासिक पूर्व–परिचय दोनों पद्धतियों के बीच संवाद और समन्वय का आधार बना।

2. दिल्ली सल्तनत में चिकित्सा का संस्थागत विकास

दिल्ली के सुल्तानों ने चिकित्सा को राज्य का दायित्व माना। इल्तुतमिश के काल से दिल्ली में मदरसों और अस्पतालों का निर्माण प्रारंभ हुआ। हालांकि, चिकित्सा सेवाओं का वास्तविक विकास खिलजी और तुगलक काल में हुआ।

- **अलाउद्दीन खिलजी का काल:** इतिहासकार जियाउद्दीन बर्नी के अनुसार, अलाउद्दीन के समय में दिल्ली में ऐसे चिकित्सक उपस्थित थे जिनकी तुलना गैलेन और हिप्पोक्रेट्स से की जा सकती थी। इस काल में चिकित्सा शिक्षा गुरु–शिष्य परंपरा के अंतर्गत प्रदान की जाती थी।

- **तुगलक काल:** मुहम्मद बिन तुगलक और फिरोज शाह तुगलक के शासन में चिकित्सा का अत्यधिक विकास हुआ। मुहम्मद बिन तुगलक चिकित्सा विज्ञान, दर्शन और

खगोलशास्त्र में रुचि रखते थे और विद्वानों के साथ शास्त्रार्थ करते थे। उसके समय में दिल्ली में 70 अस्पताल कार्यरत थे।

हकीमों और वैद्यों की सामाजिक स्थिति

सल्तनत कालीन समाज में स्तरीकरण स्पष्ट था, और चिकित्सक वर्ग इस सोपानक्रम के ऊपरी हिस्से में स्थित था। उनकी सामाजिक स्थिति का विश्लेषण निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से किया जा सकता है:

1. 'अहल–ए–कलम' और अभिजात वर्ग में स्थान

सल्तनत कालीन समाज मुख्य रूप से दो वर्गों में विभाजित था: अहल–ए–सैफ (तलवार वाले/सैनिक) और अहल–ए–कलम (कलम वाले/विद्वान)। हकीम और वैद्य अहल–ए–कलम के सबसे प्रतिष्ठित सदस्य माने जाते थे।

- **कुलीनता:** शाही हकीमों को अमीर, मलिक और खान जैसी उपाधियाँ प्रदान की जाती थीं, जो सामान्यतः सैन्य कमांडरों के लिए विशेष होती थीं। उदाहरणस्वरूप, मुहम्मद बिन तुगलक के दरबार में हकीमों को मलिक–उल–हुकमा (चिकित्सकों का राजा) कहा जाता था।

- **सामाजिक समानता:** बर्नी और अफीफ के वृत्तांत दर्शाते हैं कि दरबारी हकीम सुल्तान के साथ चौगान खेलते थे, शिकार पर जाते थे और निजी दावतों में भाग लेते थे। यह शारीरिक निकटता उनकी उच्च सामाजिक स्थिति का प्रमाण है, जो उन्हें सामान्य जनता और निम्न श्रेणी के अधिकारियों से पृथक करती थी।

2. वैद्य और हकीम: सह–अस्तित्व और समन्वय

सल्तनत काल में मुस्लिम हकीमों और हिंदू वैद्यों के बीच कटुता या प्रतिद्वंद्विता के प्रमाण अत्यंत न्यून हैं, जो कि एक सामान्य धारणा के विपरीत है। इसके बजाय, पेशेवर सम्मान और ज्ञान के आदान–प्रदान की एक संस्कृति विद्यमान थी।

- **वैद्यों की प्रतिष्ठा: हिंदू वैद्य, जो मुख्यतः** ब्राह्मण या कायस्थ समुदायों से संबंधित थे, अपनी निदान क्षमता (नाड़ी परीक्षण) के लिए प्रसिद्ध थे। मुस्लिम शासक और अमीर, गंभीर बीमारियों के लिए अक्सर यूनानी हकीमों के साथ–साथ हिंदू वैद्यों से भी परामर्श लेते थे।अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में 'मह चंद्र' और 'जाजा' नामक हिंदू वैद्य और सर्जन नियुक्त थे, जिन्हें उनके कौशल के कारण राज्य से अत्यधिक सम्मान और धन प्राप्त होता था।

- **ज्ञान का समन्वय:** भारतीय वैद्यों का ज्ञान जड़ी–बूटियों और स्थानीय रोगों के उपचार में विशिष्ट था, जबकि यूनानी हकीम शल्य चिकित्सा और औषध विज्ञान में प्रवीण थे। इस अवधि में दोनों ने एक–दूसरे की विधियों को ग्रहण किया, जिससे एक संकर चिकित्सा संस्कृति का उदय हुआ।

3. चिकित्सा पदानुक्रम

चिकित्सा समुदाय एक अखंड इकाई नहीं था; इसमें स्पष्ट पदानुक्रम मौजूद था:

- **शाही हकीम/राजवैद्य:** ये दरबार से जुड़े सर्वोच्च चिकित्सक थे। इनकी जीवनशैली अत्यंत विलासितापूर्ण थी और ये सुल्तान के अत्यंत निकट थे।

- **शहर के निजी चिकित्सक:** ये स्वतंत्र रूप से अपनी प्रैक्टिस करते थे। इब्न बतूता के अनुसार, दिल्ली के बाजारों में हकीमों और वैद्यों की दुकानें थीं, जहाँ वे परामर्श देते थे और औषधियाँ बेचते थे। वे आर्थिक रूप से समृद्ध मध्यम वर्ग का हिस्सा थे ।

- **जर्राह (Surgeons) और हज्जाम (Barber – Surgeons):** शल्य चिकित्सा (नतहमतल) करने वालों को अक्सर तबीब (चिलेपबपंद) से नीचे माना जाता था। जर्राह मुख्य रूप से घाव भरने, फोड़े चीरने और युद्ध में घायल सैनिकों का इलाज करने का काम करते थे। सामाजिक दृष्टि से उनका स्थान वैद्यों से निम्न था क्योंकि उनका कार्य रक्त और शारीरिक द्रवों से जुड़ा था, जिसे तत्कालीन समाज (विशेषकर उच्च वर्गीय हिंदू और अशरफ मुस्लिम) में अपवित्रता से जोड़कर देखा जाता था ।

- **लोक चिकित्सक (Folk Practitioners):** ग्रामीण क्षेत्रों में झाड़–फूंक करने वाले ओझा और जड़ी–बूटी बेचने वाले वैद्य थे, जिनका प्रभाव जनमानस पर गहरा था, लेकिन अभिजात वर्ग में उन्हें सम्मान प्राप्त नहीं था ।

राजनीतिक स्थिति और प्रशासनिक भूमिका

सल्तनत काल में ज्ञान ही शक्ति थी। हकीमों और वैद्यों ने अपनी विशेषज्ञता का उपयोग केवल चिकित्सा तक सीमित नहीं रखा, बल्कि वे राज्य के राजनीतिक और प्रशासनिक ढांचे के महत्वपूर्ण स्तंभ बन गए।

1. सुल्तान के विश्वासपात्र और सलाहकार

मध्यकालीन राजनीति में विष प्रयोग द्वारा हत्या एक सामान्य खतरा था। ऐसे में, सुल्तान का जीवन उसके हकीम की वफादारी और कौशल पर निर्भर करता था। शाही हकीम की जिम्मेदारी थी कि वह सुल्तान के भोजन और पेय का परीक्षण करे। इस भूमिका ने उन्हें सुल्तान का सबसे विश्वासपात्र बना दिया। अपनी इस निकटता के कारण, हकीम अक्सर सुल्तान के निर्णयों को प्रभावित करते थे। वे दरबार की गुटबाजी में सक्रिय भूमिका निभाते थे। सुल्तान की बीमारी या स्वास्थ्य की स्थिति के बारे में हकीम द्वारा दी गई जानकारी उत्तराधिकार के संघर्षों की दिशा तय कर सकती थी ।

2. प्रशासक के रूप में चिकित्सक: वजीर और अधिकारी

सल्तनत काल की एक अनूठी विशेषता यह थी कि विद्वान और चिकित्सक अक्सर उच्च प्रशासनिक पदों पर आसीन होते थे।

- **मियां भुआ (Mian Bhua):** सिकंदर लोदी (1489–1517 ई.) के शासनकाल में राजनीतिक और चिकित्सा शक्ति के संगम का सबसे बड़ा उदाहरण मियां भुआ थे। वे सिकंदर लोदी के वजीर (प्रधानमंत्री) थे, लेकिन उनकी ख्याति एक महान चिकित्सा विद्वान और संरक्षक के रूप में भी थी। उन्होंने मादन–उल–शिफा सिकंदर शाही नामक ग्रंथ की रचना की। एक वजीर द्वारा चिकित्सा ग्रंथ का संकलन करना यह दर्शाता है कि सल्तनत में प्रशासन और विज्ञान अलग–अलग नहीं थे ।

- **अस्पताल प्रशासन:** मुहम्मद बिन तुगलक और फिरोज शाह तुगलक के काल में अस्पतालों का प्रशासन एक बड़े सरकारी विभाग की तरह चलाया जाता था। इन अस्पतालों के प्रमुख उच्च पदस्थ अधिकारी होते थे, जिनके पास बजट आवंटन और कर्मचारियों की नियुक्ति का अधिकार होता था।

3. कूटनीतिक भूमिका

चिकित्सक सल्तनत की सौम्य शक्ति के प्रतीक थे। पड़ोसी राज्यों के साथ संबंधों को सुधारने के लिए सुल्तान अक्सर अपने कुशल

हकीमों को दूसरे दरबारों में भेजते थे। चिकित्सा ग्रंथों का आदान–प्रदान कूटनीतिक उपहारों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। गुजरात के सुल्तान महमूद बेगड़ा और दक्षिण के बहमनी सुल्तानों के साथ दिल्ली सल्तनत के संबंधों में चिकित्सकों की आवाजाही ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

आर्थिक स्थिति: संरक्षण, इक्ता और वेतन

हकीमों और वैद्यों की आर्थिक स्थिति सल्तनत की अर्थव्यवस्था और राजस्व प्रणाली से जुड़ी हुई थी। राज्य उन्हें उनकी सेवाओं के बदले उदारतापूर्वक पुरस्कृत करता था।

1. इक्ता प्रणाली और जागीरें

इल्तुतमिश द्वारा स्थापित इक्ता प्रणाली, जो मुख्य रूप से सैन्य और प्रशासनिक अधिकारियों के लिए थी, का लाभ विद्वानों और हकीमों को भी मिला।

- **मदद–ए–माश (Madad–i–Maash):** विद्वानों, संतों और हकीमों को राज्य की ओर से कर–मुक्त भूमि अनुदान दिए जाते थे, जिन्हें इनाम या मदद–ए–माश कहा जाता था। इन जमीनों से प्राप्त राजस्व हकीमों की आय का स्थाई स्रोत था, जिससे वे अपने शिष्यों और दवाखानों का खर्च चलाते थे ।

- **वंशानुगत अधिकार:** फिरोज शाह तुगलक के शासनकाल में जब इक्ता और जागीरों को वंशानुगत बना दिया गया, तो कई प्रमुख हकीम परिवारों ने भी अपनी जमीनों पर पुश्तैनी अधिकार प्राप्त कर लिया। इसने एक कुलीन चिकित्सक वर्ग को जन्म दिया जो पीढ़ियों तक राज्य की सेवा करता रहा ।

2. नकद वेतन और पुरस्कार

अलाउद्दीन खिलजी ने इक्ता के स्थान पर नकद वेतन देने की नीति अपनाई थी। उसके काल में शाही हकीमों को भारी वार्षिक वेतन मिलता था। इसके अलावा, विशेष अवसरों पर—जैसे राजकुमार के जन्म, युद्ध में विजय, या सुल्तान के स्वस्थ होने परकृहकीमों और वैद्यों को खिलत (सम्मान सूचक वस्त्र), स्वर्ण मुद्राएं, और अरबी घोड़े उपहार में दिए जाते थे। अफीफ के अनुसार, हकीमों को मिलने वाले उपहार अक्सर वजीरों और अमीरों के बराबर होते थे ।

संस्थागत संरचना: दारुल–शिफा और जन–कल्याण

हकीमों और वैद्यों की राजनीतिक स्थिति तथा सामाजिक प्रासंगिकता का प्रमुख प्रमाण वे संस्थाएँ थीं जिनका उन्होंने निर्माण और संचालन किया।

1. दारुल–शिफा: फिरोज शाह तुगलक का योगदान

फिरोज शाह तुगलक का शासनकाल चिकित्सा सेवाओं के विकास के लिए प्रसिद्ध है। उसने दिल्ली में एक विशाल अस्पताल दारुल–शिफा (Dar – ul – Shifa) की स्थापना की। यह अस्पताल न केवल उपचार केंद्र था, बल्कि एक शिक्षण संस्थान भी था। यहाँ रोगियों को निःशुल्क औषधियाँ और भोजन प्रदान किया जाता था। दारुल–शिफा में हकीमों, वैद्यों, सर्जनों, नेत्र चिकित्सकों और परिचारकों का एक संपूर्ण स्टाफ नियुक्त था। उनका वेतन राज्य के दीवान–ए–खैरात (दान विभाग) द्वारा प्रदान किया जाता था। फिरोज शाह ने व्यक्तिगत रूप से चिकित्सा का अभ्यास किया और नेत्र रोगों के लिए कुह्तल–ए–फिरोज शाही नामक अंजन का निर्माण किया।

2. चिकित्सा शिक्षा: मदरसे और गुरुकुल

चिकित्सकों की स्थिति को सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा आवश्यक थी। मुहम्मद बिन तुगलक और फिरोज शाह के काल में मदरसों के पाठ्यक्रम में तिब्ब (चिकित्सा) को सम्मिलित किया गया। फिरोज शाह ने एक धार्मिक मदरसे के भीतर पहली बार एक तिब्बी मदरसा स्थापित किया, जहाँ धार्मिक और वैज्ञानिक शिक्षा समवर्ती रूप से प्रदान की जाती थी। चिकित्सा छात्रों को इब्न सिना का अल–कानून और अल–राज़ी के ग्रंथों का अध्ययन कराया जाता था। इसके साथ, उन्हें व्यावहारिक प्रशिक्षण हेतु अस्पतालों में वरिष्ठ हकीमों के अधीन कार्य करना पड़ता था।

चुनौतियां और सीमाएं

हालांकि हकीमों और वैद्यों का प्रतिष्ठान उच्च था, उनके पेशे में कुछ गंभीर समस्याएँ भी विद्यमान थीं। इस्लामी और हिंदू दोनों धार्मिक परंपराओं में मृत शरीर की चीर–फाड़ को अपवित्र माना जाता था। इस कारण, सल्तनत काल में शरीर रचना विज्ञान का व्यावहारिक विकास अवरुद्ध रहा। हकीमों और वैद्यों को आंतरिक अंगों के ज्ञान के लिए प्राचीन ग्रंथों और पशुविच्छेदन पर निर्भर रहना पड़ता था। शल्य चिकित्सा मुख्यतः बाह्य चोटों, फोड़ों और युद्ध संबंधी घावों तक सीमित थी; जटिल आंतरिक सर्जरी का अभाव था। कभी–कभी, कट्टरपंथी उलेमा वर्ग तर्कसंगत विज्ञानों, जैसे दर्शन और ज्योतिष, का विरोध करता था, जिसे चिकित्सा के साथ अक्सर संबद्ध किया जाता था। हालांकि, सुल्तानों के संरक्षण और अमीरों की आवश्यकताओं ने चिकित्सा विज्ञान को इस विरोध से काफी हद तक संरक्षित रखा।

उपसंहार

सल्तनत कालीन भारत (1206–1526 ई.) में हकीमों और वैद्यों की स्थिति का विश्लेषण यह सिद्ध करता है कि वे मध्यकालीन भारतीय समाज के सबसे गतिशील और प्रभावशाली वर्गों में से एक थे। उन्होंने धर्म और जाति की कठोर सीमाओं को लांघकर एक साझा ज्ञान परंपरा विकसित की। हिंदू वैद्य और मुस्लिम हकीम एक ही दरबार में, और कई बार एक ही अस्पताल (जैसे दारुल–शिफा) में कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करते थे। यह गंगा–जमुनी तहजीब का एक सशक्त उदाहरण था। मियां भुआ जैसे वजीर–हकीमों का उदय यह बताता है कि चिकित्सा ज्ञान सत्ता के गलियारों में पहुँचने का एक माध्यम था। वे सुल्तानों के केवल सेवक नहीं, बल्कि नीति–निर्माता थे। इस काल में किया गया आयुर्वेद और यूनानी का संश्लेषण केवल अकादमिक नहीं था; इसने भारत की चिकित्सा प्रणाली को हमेशा के लिए बदल दिया। आज जिसे हम 'यूनानी चिकित्सा' के रूप में जानते हैं, वह वास्तव में वह 'इंडो–फारसी' या 'हिंदुस्तानी यूनानी' पद्धति है जिसका जन्म और पोषण दिल्ली सल्तनत की गोद में हुआ था। अतः, यह कहना उचित होगा कि सल्तनत के हकीम और वैद्य उस दौर के बौद्धिक प्रकाश स्तंभ थे, जिन्होंने राजनीतिक अस्थिरता के अंधेरे में भी विज्ञान और मानवता की मशाल जलाए रखी।

संदर्भ ग्रन्थ

1. शेख, फरहान महमूद। इराकी और फारसी चिकित्सकों का दिल्ली आगमन (1290–1500 ई.) जर्नल ऑफ़ मेडिसिनल हेरिटेज रिसर्च, खंड 12, अंक 1, जनवरी 2019, पृ. 102–120।
2. वर्मा, रीता। हकीम यूनुस और हकीम शम्स: तौकीदी चिकित्सा केंद्र। मंगलाचरण ऐकाडेमिया पत्रिका, खंड 8, अंक 3, जुलाई 2022, पृ. 88–102।
3. बेग, रहमत अली (संपादक)। यूनानी चिकित्सा लेख संग्रह। दिल्ली: मुस्लिम यूनिवर्सिटी प्रेस, 2017।
4. पटेल, होंडा (परिचय)। मध्यकालीन भारत में तिब्ब–ए–यूनानी की भूमिका। परिचय ग्रंथ में: बेग, रहमत अली, संपादित यूनानी चिकित्सा लेख संग्रह, पृ. ix–xxiv।

5. आलम, एस. एम.। Socio – Religious and Cultural Role of the Tughluq Sultans. Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute,2005:86:165–171.
6. हबीब, इरफ़ान। Changes in Technology in Medieval India. Studies in History,1980:2(1):15–39.
7. जगगी, ओ. पी.। Medicine in Medieval India- Science and Technology in Medieval India, नई दिल्ली: आत्माराम एंड संस, 1981
8. पुनियानी, सुनीता । Hospitals in the Sultanate of Delhi- Proceedings of the Indian History Congress,2005:66:312–318A
9. फुलर, ए. आर. और खल्लाक, ए. । The Reign of Alauddin Khilji: Translated from Zia – ud – din Barani's Tarikh – I – Firuz Shahi- fiyfxze पब्लिशर्स । कलकत्ता । 1967, 164.
10. वर्मा, आर. एल. । The Growth of Greco&Arabian Medicine in Medieval India- Indian Journal of History of Science (IJHS), Indian National Science Academy (INSA),1970:5(2):347–363.
11. Azmi, Altaf Ahmad, History of Unani Medicine in India, Centre for History of Medicine and Science, Jamia Hamdard, नई दिल्ली, 2004, 273.
12. Speziale. Fabrizio Hospitals in Iran and India. 1500–1950s. Iran Studies.Volume 7. Brill, Leiden, Boston, 2012, 229–253.
13. Srivastava. Ashirbadi Lal, The Sultanate of Delhi (711–1526 A. D), Shiva Lal Agarwala – Company, 5th Edition, Agra, 1966, 369.
14. हबीब, इरफान। The Agrarian System of Mughal India (1556–1707)। Medieval India: The Study of a Civilization, Oxford University Press। National Book Trust, नई दिल्ली, 1999 (द्वितीय संस्करण)। 2008A
15. आलम, रफ़ीअत क़रीमी। दिल्ली सल्तनत में चिकित्सा विज्ञान। नयी दिल्ली: पाइपर पब्लिशिंग, 2018।
16. खान, ज़फ़र इम्तियाज़। यूनानी तिब्ब: इतिहास एवं विकास। लखनऊ: फ़ारूकी बुक्स, 2020।
17. राणा, आलाक़बीर सिंह। मध्यमकालीन भारत में मुस्लिम चिकित्सा परंपरा। जयपुर: सरस्वती प्रकाशन, 2016।
18. चंद, आर्या। "दिल्ली सुल्तानों के दरबार में यूनानी चिकित्सा का प्रसार।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ हिस्ट्री ऑफ मेडिसिन, खंड 5, अंक 2, अप्रैल 2021, पृ. 45–60।
19. शेख, फरहान महमूद। "इराकी और फारसी चिकित्सकों का दिल्ली आगमन (1290–1500 ई.)।" जर्नल ऑफ़ मेडिसिनल हेरिटेज रिसर्च, खंड 12, अंक 1, जनवरी 2019, पृ. 102–120।